पाठ - 5

FP45K8

श्रीकृष्ण

आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व भारत भूमि की समृद्धि और सम्पन्नता अपनी चरम सीमा पर थी। देश में अनेक वैभव सम्पन्न तथा शक्तिशाली राज्य थे। भारतीय समाज में एक नयी उमंग, एक नयी स्फूर्ति आ गयी थी किंतु यह वैभव और शक्ति अधिक दिन तक स्थिर न रह सकी। पारस्परिक विद्वेष और स्वेच्छाचारिता की भावनाएँ प्रबल होने लगीं। जन कल्याणकारी परम्पराएँ टूटने लगीं। प्रजा जरासंध, कंस और शिशुपाल जैसे शासकों के दमन चक्र का शिकार बन गईं अत्याचार और राजनीतिक कुचक्र के इस वातावरण में कंस की बहन देवकी अपने पति वासुदेव के साथ कंस के कारागार में बन्दी थीं। वहाँ देवकी के गर्भ से श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। कंस के भय से श्रीकृष्ण का पालन-पोषण गोकुल में नन्द के घर में हुआ।

श्रीकृष्ण बाल्यावस्था से ही इतने पराक्रमी और साहसी थे कि उनके द्वारा किए गए कार्यों को देखकर लोग आश्चर्यचकित हो जाते थे और उन्हें अलौकिक मानने लगे थे। कंस अपनी सुरक्षा के लिए कृष्ण का अंत करना चाहता था। इस कार्य के लिए उसने जिन लोगों को भेजा उन सबका श्रीकृष्ण ने बाल्यावस्था मंे ही वध कर दिया। कभी तो वे अपनी बाँसुरी के मधुर स्वर से सभी को आत्मिक सुख प्रदान करते दिखायी पड़ते तो कभी कंस के

अत्याचारों से गोकुलवासियों की रक्षा करते हुए लोकहित में प्रवृत्त दिखायी देते। श्रीकृष्ण को अध्ययन करने हेतु सन्दीपन गुरु के आश्रम भेजा गया। गुरुकुल में कृष्ण ने अपने गुरु की सेवा करते हुए विद्या प्राप्त की।

कंस के स्वेच्छाचारी एवं क्रूर शासन के कारण प्रजा में व्यापक असन्तोष था। गोकुल में श्रीकृष्ण के नेतृत्व में कंस के अत्याचारी शासन का विरोध आरंभ हो गया। कंस इस स्थिति को जानता था। उसने कृष्ण के वध का षड्यन्त्र रचा और अक्रूर द्वारा श्रीकृष्ण को बुलवाया। गोकुलवासियों को कंस पर सन्देह था। वे नहीं चाहते थे कि श्रीकृष्ण मथुरा जाकर कंस के जाल में फँसे। श्रीकृष्ण ने तो अत्याचारियों का अंत करने का संकल्प ही कर लिया था, अतः वे अपने बड़े भाई बलराम के साथ मथुरा आ पहुँचे। योजनानुसार मथुरा में मल्लयुद्ध आरंभ हुआ। श्रीकृष्ण ने मल्लयुद्ध मंे कंस के चुने हुए पहलवानों को पराजित किया और अंत में उन्होंने कंस को मार डाला। उस समय हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र का राज्य था। वहाँ के राज परिवार में कौरव और पाण्डवों के बीच कलह चल रही थी। पाण्डवों को उनका अधिकार देने के लिए कौरव कदापि तैयार नहीं थे। इस कलह को रोकने के लिए श्रीकृष्ण ने बहुत से प्रयास किए। वे पाण्डवों की ओर से सन्धि का प्रस्ताव लेकर कौरवों के पास गए। श्रीकृष्ण ने धृतराष्ट्र से निवेदन किया, ‘‘महाराज! वीरों का विनाश हुए बिना ही कौरवों और पाण्डवों में सन्धि हो जाए, मैं यही प्रार्थना करने आया हूँ।’’ श्रीकृष्ण ने धृतराष्ट्र के निरंकुश पुत्र दुर्योधन को भी समझाते हुए कहा, ‘‘ हे तात! सन्धि से ही तुम्हारा और जगत का कल्याण होगा।’’ लेकिन दुर्योधन अपने इसी हठ पर डटा रहा कि मैं युद्ध के बिना सुई की नोंक के बराबर भी भूमि पाण्डवों को नहीं दूँगा। इस प्रकार श्रीकृष्ण का सन्धि प्रयास असफल हो गया। परिणामस्वरूप कौरवों एवं पाण्डवों में भयंकर युद्ध हुआ जिसे महाभारत युद्ध के नाम से जाना जाता है।

महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी बने। अर्जुन राज्य और सुख के लिए अपने गुरु तथा कुल के लोगों से युद्ध करने के लिए तैयार नहीं हुए। उन्हें अपने स्वजनों को देखकर मोह उत्पन्न हो गया। उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपने कत्र्तव्य के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आत्मा, अजर और अमर है। जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्र ग्रहण करता है, उसी प्रकार आत्मा जीर्ण शरीर को छोड़कर नये शरीर में प्रवेश करती है। इस आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न आग जला सकती है, न पानी गला सकता है और न वायु सुखा सकती है। अतः प्रत्येक मनुष्य को फल की चिंता किए बिना अपने कत्र्तव्य का पालन करना चाहिए। सफलता और असफलता के प्रति समान भाव रखकर कार्य करना ही श्रेयस्कर है। यही कर्मयोग है। कृष्ण के उपदेश गीता के अमृत वचन हैं।

गीता में श्रीकृष्ण ने कर्म का जो महामन्त्र दिया है, वह मानव समाज के लिए वरदान है। इस पर मनन कर मनुष्य सांसारिक सुख से ऊपर उठकर कर्म करने की प्रेरणा प्राप्त करता है जो जीवन का वास्तविक सुख है। गीता वास्तव में भारतीय चिन्तन और धर्म का निचोड़ है और इसमंे सारे संसार तथा समस्त मानव जाति को एक सूत्र में बाँधने की पूर्ण क्षमता है।

श्रीकृष्ण के उपदेश सुनकर अर्जुन को अपने कत्र्तव्य का ज्ञान हुआ और उन्होंने वीरतापूर्वक युद्ध किया। श्रीकृष्ण के कुशल संचालन के कारण महाभारत के युद्ध मंे पाण्डव विजयी हुए। वस्तुतः यह पाण्डवों की कौरवों पर विजय नहीं थी बल्कि धर्म की अधर्म पर, न्याय की अन्याय पर, सत्य की असत्य पर विजय थी।

श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व के विषय में संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि वे व्यक्ति नहीं एक परम्परा थे। वे दार्शनिक भी थे और कर्मयोगी भी। वे राजनीतिज्ञ भी थे और समाज सुधारक भी। वे योद्धा भी थे और शान्ति के अग्रदूत भी। वे गुरु थे और सखा भी थे। इसलिए तो लोग उन्हें ईश्वर का अवतार मानते हैं।

अभ्यास

1. श्रीकृष्ण के समय भारत की क्या स्थिति थी ?

2. श्रीकृष्ण के बाल जीवन का वर्णन कीजिए।

3. कंस के जीवन का अंत किस प्रकार हुआ ?

4. कौरवों तथा पांडवों के बीच सन्धि के लिए कृष्ण ने क्या किया ?

5. युद्ध क्षेत्र में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए उपदेश का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

6. महाभारत के युद्ध का क्या परिणाम हुआ ?

7. कृष्ण को ईश्वर का अवतार क्यों माना जाता है ?

8. सही कथन के सामने सही (√) तथा गलत कथन के सामने गलत (X) का निशान लगाएँ -

(क) श्रीकृष्ण के गुरू का नाम संदीपन था।

(ख) श्रीकृष्ण के उपदेश रामायण के अमृत वचन हैं।

(ग) आत्मा अजर-अमर है।

(घ) उस समय हस्तिनापुर में कंस का राज्य था।